CBSE Class 07 Hindi
NCERT Solutions
पाठ-09 चिड़िया की बच्ची

1. किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था और किन बातों से ज्ञात होता है कि वह सुखी नहीं था?

उत्तर:- माधवदास ने अपनी कोठी संगमरमर की बनवाई थी, उनके पास धन की कोई कमी न थी,उनके पास बगीचा भी था जहाँ सुन्दर सा फव्वारा था। वे धन के अभिमान से युक्त चिड़िया को प्रलोभन देते हुए यह भी कहते हैं कि उनके पास बहुत सा सोना-मोती है, वे उसके लिए सोने का ऐसा घर बनवा देंगे जिसमें मोतियों की झालर लटकी होगी आदि बातों से हमें पता चलता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था।

उनकी शाम की स्वप्न की भाँति गुजरती थी, घर पर सब कुछ होते हुए भी कुछ खाली-खाली सा रहता था, उनका महल भी सूना था, वहाँ कोई ऐसा नहीं था, जिसे देखकर उनका दिल बहले या जिससे वे अपनी मन की बात कह सके , उनका मन अकसर उदास रहता था। चिड़िया को देखकर उसे अपने पास रोकने के लिए तरह-तरह का प्रलोभन देना आदि बातों से पता चलता है कि संपन्न होने के बावजूद माधवदास सुखी नहीं थे।

2. माधवदास क्यों बार-बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है? क्या माधवदास निःस्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- माधवदास का बार-बार चिड़िया से यह कहना कि यह बगीचा तुम्हारा ही है यह दर्शाता है कि उन्हें वह चिड़िया बड़ी प्यारी लगी अत: वे उस चिड़िया को अपने पास ही रखना चाहते थे।

माधवदास ने यह कथन पूरी तरह से निःस्वार्थ मन से नहीं कहा था क्योंकि चिड़िया को देखने के पश्चात अब वे उस चिड़िया को अपने बगीचे में मनबहलाव और आत्म-संतुष्टि के लिए रखना चाहते थे।

3. माधवदास के बार-बार समझाने पर भी चिड़िया सोने के पिंजरे और सुख-सुविधाओं को कोई महत्त्व नहीं दे रही थी। दूसरी तरफ़ माधवदास की नज़र में चिड़िया की ज़िद का कोई तुक न था। माधवदास और चिड़िया के मनोभावों के अंतर क्या-क्या थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- चिड़िया और माधवदास के मनोभावों में मुख्य अंतर भावनात्मक सुख और भौतिक सुख का था। एक तरफ़ माधवदास के लिए धन-संपत्ति से बढ़कर जीवन में कुछ नहीं था।उन्हें यह विश्वास था कि वह धन से कुछ भी खरीद सकते हैं परन्तु दूसरी तरफ़ चिड़िया के लिए ये सारी सुख-सुविधाएँ व्यर्थ थी। उसके लिए अपनी माँ की गोद से प्यारा कुछ नहीं था। इसी कारण चिड़िया जहाँ माधवदास के बार-बार समझाने पर भी सोने के पिंजरे और सुख-सुविधाओं को कोई महत्त्व नहीं दे रही थी, वहीं दूसरी ओर धन को ही सर्वोपरि समझने के कारण माधवदास को चिड़िया की घर जाने की ज़िद बेतुकी लग रही थी।

4. कहानी के अंत में नन्हीं चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर तुम्हें कैसा लगा? चालीस-पचास या इससे कुछ अधिक शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर:- कहानी के अंत में नन्हीं चिड़िया का बुद्धिमानी पूर्वक सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलना और सीधे अपनी माँ की गोद में पहुँचने की बात पढ़कर हमें अति आनंद हुआ।
यदि इस कहानी का सुखद अंत न होता तो जीवन भर नन्हीं चिड़िया को सेठ की कैद में अर्थात पिंजरे में रहना पड़ता। वह कभी स्वच्छंदता की उड़ान न भर पाती और अपनी माँ से मिलने के लिए तरस जाती। अत: नन्हीं चिड़िया का लालच में न फँसना और सुरक्षित भाग निकलना यह भी बताता है कि स्वतंत्रता से बहुमूल्य कुछ भी नहीं है।परतंत्र रह कर मिलने वाले समस्त सुख उसके आगे व्यर्थ हैं।

5. 'माँ मेरी बाट देखती होगी' - नन्ही चिड़िया बार-बार इसी बात को कहती है। आप अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि हमारी ज़िंदगी में माँ का क्या महत्त्व है?
उत्तर:- कहते हैं ईश्वर साक्षात दिखाई नहीं देता इसीलिए उसने धरती पर माँ को भेजा जो हर मुश्किल घड़ी में हमारे साथ रहती है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में उसकी माँ का होना किसी अनुपम वरदान से कम नहीं होता। एक बच्चे के लिए उसकी माँ की एहमियत दुनिया में सबसे अधिक होती है। वह न केवल बच्चे को जन्म देती है बल्कि उसका सही ढंग से पालन-पोषण करती है और अच्छे संस्कार देती है। वही बच्चे की पहली दोस्त और अध्यापिका भी होती है।माँ बिना कुछ कहे मन की बात जान जाती है। आप कहीं भी चले जाएँ कितने ही बड़े क्यों ना हो जाएँ लेकिन आपको जो आत्मिक सुकून अपनी माँ के पास ही मिलता है उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

6. इस कहानी का कोई और शीर्षक देना हो तो आप क्या देना चाहेंगे और क्यों?
उत्तर:- इस कहानी के लिए हम अन्य शीर्षक 'सच्चा सुख' दे सकते हैं क्योंकि यहाँ पर जीवन में सच्चा सुख क्या होता है वह एक छोटी सी चिड़िया के माध्यम से बताया गया है।अन्य शीर्षक" बुद्धिमान चिड़िया"भी हो सकता है क्योंकि अपनी चालाकी से उसे संकट से मुक्ति मिली।

7. इस कहानी में आपने देखा कि वह चिड़िया अपने घर से दूर आकर भी फिर अपने घोंसले तक वापस पहुँच जाती है। मधुमक्खियों, चींटियों, ग्रह-नक्षत्रों तथा प्रकृति की अन्य विभिन्न चीज़ों में हमें एक अनुशासनबद्धता देखने को मिलती है। इस तरह के स्वाभाविक अनुशासन का रूप आपको कहाँ-कहाँ देखने को मिलता है? उदाहरण देकर बताइए।
उत्तर:- ऋतु चक्र,सूर्य और चाँद का उदित और अस्त होना, तारों का रात में चमकना, पृथ्वी का सूर्य के चारों और चक्कर लगाना, पशुओं का भी दिनभर घूम-फिर कर शाम के समय घर लौटना आदि सभी अनुशासन का पालन करते हैं।

8. सोचकर लिखिए कि यदि सारी सुविधाएँ देकर एक कमरे में आपको सारे दिन बंद रहने को कहा जाए तो क्या आप स्वीकार करेंगे? आपको अधिक प्रिय क्या होगा - 'स्वाधीनता' या 'प्रलोभनोंवाली पराधीनता'?
ऐसा क्यों कहा जाता है कि पराधीन व्यक्ति को सपने में भी सुख नहीं मिल पाता।
नीचे दिए गए कारणों को पढ़ें और विचार करें -
क) क्योंकि किसी को पराधीन बनाने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति स्वयं दुखी होता है, वह किसी को सुखी नहीं कर सकता।

ख) क्योंकि पराधीन व्यक्ति सुख के सपने देखना ही नहीं चाहता।

ग) क्योंकि पराधीन व्यक्ति को सुख के सपने देखने का भी अवसर नहीं मिलता।

उत्तर:- सारी सुख-सुविधा मिलने पर भी हम 'स्वाधीनता' ही स्वीकार करेंगे न कि 'प्रलोभनों वाली पराधीनता', क्योंकि सुविधाएँ कितनी भी क्यों न मिल जाएँ ,हम हैं तो किसी के अधीन ।

पराधीन व्यक्ति दूसरों के अधीन रहने के कारण आत्मिक सुख से सदा वंचित ही रहता है।

• भाषा की बात

9. पाठ में पर शब्द के तीन प्रकार के प्रयोग हुए हैं -

क) गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आन बैठी।

ख) कभी पर हिलाती थी।

ग) पर बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई।

तीनों 'पर' के प्रयोग तीन उद्देश्यों से हुए हैं। इन वाक्यों का आधार लेकर आप भी 'पर' का प्रयोग कर ऐसे तीन वाक्य बनाइए जिनमें अलग-अलग उद्देश्यों के लिए 'पर' के प्रयोग हुए हों।

उत्तर:- 1. जामुन के पेड़ पर तोता बैठा है।

2. उस मोर के पर कितने सुंदर हैं।

3. राधा का रीना पर बहुत एहसान है।

---

10. पाठ में तैंने, छनभर, खुश करियो-तीन वाक्यांश ऐसे हैं जो खड़ी बोली हिन्दी के वर्तमान रूप में तूने, क्षणभर, खुश करना लिखे-बोले जाते हैं लेकिन हिन्दी के निकट की बोलियों में कहीं-कहीं इनके प्रयोग होते हैं। इस तरह के कुछ अन्य शब्दों की खोज कीजिए।

उत्तर:- अइयो - आओ

करियो - करना

दियो - देना